IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

''महादेवी वर्मा का नारी चिन्तन''

डॉ. देशपति सार्मे
सहायक प्राध्यापक 'हिन्दी', शासकीय महाविद्यालय पुष्पराज गढ़ म0 प्र0
नीला देवी
शोधार्थी 'हिन्दी' अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवॉ (म. प्र.)

महादेवी वर्मा का साहित्य

महादेवी' जी ने काव्य सृजन को मनुष्य के समान अनुभूतियों से ऊपर जरूर माना है। यदि काव्य उसका कृतिकार एक सामान्य व्यक्ति की तरह सुख और दुःख में डूबकर रह जाता है तथा किसी नये प्रेरक विचार द्वारा क्षितिज का निर्माण नहीं करता तो वह उदात्त काव्य नहीं हो सकता। इनकी संवेदनाएं काव्य में प्रस्तुत होती है, जबकि विचार और चिन्तन गद्य की विभिन्न विधाओं यथा–निबन्ध, संस्मरण, यात्रावृत्त, रेखाचित्र, जीवनी आदि में प्रतिफलित होते है। इनके कृतित्व–विकास को पद्य और गद्य की विधागत विवेचन के रूप में क्रमशः यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

महादेवी के साहित्यिक लेखों में महाकरूणा के अवतार गौतम बुद्ध के बुद्धत्व भारतीय संस्कृति, कला, साहित्य, सहित्यकार, सम्पादक, आधुनिक लेखक, अभिनय–कला, राष्ट्र भाषा विज्ञान विषयक मीमांसाएँ पूर्णरूपेण मुखरित हुई है'। 'महादेवी' ने इन विषयों पर रचे अपने गद्य में एक ऐतिहासिक एक सूत्रता भी दी है और साहित्य को चिरन्तन सत्य के रूप में स्वीकार किया है। व्यक्ति में समष्टि और समष्टि में व्यक्ति की खोज अनेकात्मकता में एकता, एकता में अनेकात्मकता की भाँति वे जीवन और साहित्य के सामंजस्य को प्रतिपादित करती चलती है।

गद्य–साहित्य

महादेवी का गद्य–साहित्य मूलतः समाज के वर्तमान रूप में पूरी तरह जुड़ा हुआ है। उनका गद्य जन–जन के पीड़ित जीवन का आर्त–स्वर है। लेकिन वह किसी हारे हुए विद्रोही का स्वर नहीं, अँगड़ाई लेकर उठने को बेचौन विद्रोही की हुंकार है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में छायावाद के चार महान स्तम्भों में महादेवी जी का महत्वपूर्ण स्थान है। साहित्य में उनका स्थान एक कवयित्री के रूप में ही नहीं है, बल्कि हिन्दी भाषा को सजाने–सँवारने में, उसको एक विशेष लालित्य और अर्थ–गाम्भीर्य प्रदान करने में उन्होने जो भगीरथ प्रयत्न किया है, वह अद्वितीय है। महादेवी जी की रचना धर्मिता पद्य और गद्य दोनों रूपों में सम्माननीय है। उनका सम्पूर्ण गद्य साहित्य उनके व्यक्तित्व की देन है, उनका जातिगत अनुभव ही उनके लेखन का मेरूदण्ड हैं। लोकमंगलकारी आदर्शवादिता के साथ उनके गद्य साहित्य में विराजमान है। महादेवी वर्मा का गद्य–संसार अत्यन्त विशाल, मोहक और अनुभूतिपूर्ण है'। इनका क्षेत्र माननीय धरातल को पार करके पशु–पक्षी, वृक्ष–लता, नदी पर्वत, निर्झर तक फैला हुआ है इसमें एक ओर काव्य की रसात्मक अनुभूति है तो दूसरी ओर माननीय शौर्य, पराक्रम, दृढ़ता की कठोर शिलाएँ भी है। इनके लेखन का मूल केन्द्र वास्तविक वृतान्त होता है, इसलिए उनके गद्य–लेखन का कार्य अधिक कठिन और विरल है। उपन्यास, नाटक, कहानी एकांकी इन सब में कल्पना का आश्रय अपेक्षाकृत अधिक रहता है।

महादेवी जी जहाँ विचारों और भावों को अनुभूति के दायरे में रखती है, वहीं उनके पद्य साहित्य से प्रकट होता है, लेकिन जब उन्हीं विचारों को विस्तारित करना होता है तब वे निबन्धों, संस्मरणों और रेखाचित्रों का आश्रय–ग्रहण करती है। यही कारण है कि उनके गद्य में भी पद्य के समान प्रवाह और आत्मीयता व्यक्त होती है। महादेवी जी के विवेच्य गद्य से उनके प्रखर पाण्डित्य और चिन्तन शैली का परिचय मिलता है। अनुभूति और विचारों के संयोग से बौद्धिकता के तथ्य को सुगम–सुलभ बनाकर जो ऐतिहासिक एक सूत्रता उन्होने दी है, वह साहित्य का देय हैं। विवेचना के माध्यम से उन्होने साहित्य को चिरन्तन सत्य के रूप में स्वीकार किया है। व्यक्ति में समष्टि और समष्टि में व्यक्ति की खोज, अनेकात्मकता में एकता, एकता में अनेकता की शान्ति वे जीवन और साहित्य को प्रतिपादित करती चलती है। उनका गद्य क्षण–क्षण, पग–पग स्वीकार करता चलता है। वे न ब्रह्मा है और न ही देवी। वे महज एक सहज नारी है, जिनमें न ही बालिका की माँगे–मनुहारे है, किशोरी की अल्हड़ता है, युवती की अभिलाषाएँ और तन–मन पर चोट कर देने की क्षमता के साथ बहिन की शुभकामनाएँ स्नेह और माता की निःसीम वात्सल्य भरा दुलार भी है। नेह और नीड़ का मोह उन्हें भी उतना बाँधता है, जितना किसी अन्य नारी को बाँधता है'।

महादेवी जी ने परम्परा से प्रचलित नाटक कहानी और उपन्यास की रचना नहीं कि बल्कि सर्वथा नवीन विधा संस्मरण, रेखाचित्र और यात्रा–वृत्त से अपने गद्य–उद्यान को सजाया–सँवारा हैं। उनके काव्य–प्रदेय ने उन्हें कवयित्री के रूप में इतना

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

अधिक व्यापक और प्रख्यात कर दिया कि अधिकांश आलोचकों ने उनकी काव्य उपलब्धियों की अत्यधिक चर्चा की है। 'महादेवी' जी के काव्य को अधिक प्रमुखता मिलने के कारण उनके गद्य–सृजन की उपलब्धि दब सी गयी है। 'अमृत राय' ने इन शब्दों को स्वीकार किया है–कवि के रूप में ही महादेवी अधिक प्रख्यात हैं लेकिन उनके गद्य साहित्य से थोड़ा सा भी परिचय प्राप्त करने का इस बात का पता अच्छी तरह से चल जाता है कि उनके गद्यकार का रूप उनके कवि–रूप से कम नहीं है। प्रतिपादिक विचारों और शैली दोनों की दृष्टि से हमारे आधुनिक साहित्य एक बहुत पुष्ट अंग है। आज की हमारी प्रगतिशील सामाजिक चेतना में भली–भाँति अनुप्राणित होने के कारण हमारे नवीन साहित्य को स्फूर्ति भी देता है।

'महादेवी' जी का समग्र लेखन उनके विचारो और भावों की अभिव्यक्ति है जिनमें उसका व्यापक जीवन अनुभव–गूंथा हुआ है। डॉ0 विरेन्द्र कुमार बड़सुवाला महादेवी जी के गद्य के सम्बन्ध में लिखते हैं–'महादेवी वर्मा' के गद्योद्यान मे एक ओर शृंखला की कड़ियाँ' और 'क्षणदा' नामक दो निबन्ध–पादप पुष्पित हैं, दूसरी ओर 'अतीत के चलचित्र' स्मृति की रेखाएँ और 'पथ के साथी संस्मरणों के सोंधी सोंधी महक बिखेर रहें है, इनके बीच रश्मि, नीहार, सान्ध्यगीत, नीरजा दीपशिखा आधुनिक कवि 'यामा' और 'सप्तपर्णा' की गद्य–क्यारियाँ लहलहा रही ळें

जहाँ कविता के माध्यम से महादेवी ने मानव मन की उदात्त भावनाओं की प्रतिबिम्ब काव्य में संजोया है, वहाँ उनका गद्य उनकी निजता, निश्छलता, अपनापन, ममता के साथ उनसे जुड़े हुए विराट के अवसाद, अभाव और मानवीय संवेदनाओं का विशाल संग्रह है। इस सम्बन्ध में स्वयं महादेवी जी अभिमत अधिक प्रमाणित और प्रासंगिक है–'मेरा गद्य मेरी कविता का निकष हो सकता है अथवा नहीं, इसका निर्णय दूसरे ही कर सकेंगे। जिस प्रकार मै करूणा तथा अहिंसा को एक ही सिक्के के दो पहलू मानती हूँ उसी प्रकार कविता और गद्य को परिणामतः परस्पर संयुक्त मानकर चलती हूँ। एक के लिए मेरी बुद्धि विचलित रहती है और दूसरे के लिए हृदय विकल, पर दोनों की सान्त्वना के आयाम भिन्न ही रहते है। महादेवी अभिनन्दन ग्रन्थ में महादेवी ने पद्य साहित्य में जिन विचारों को संकेत देकर छोड़ देती है गद्य मे वही विचार मूर्त होकर विस्तार पाते है। इलाचन्द्र जोशी के अनुसार–हाँ तो ''गद्य कविनां निकषवदन्ति' के सिद्धान्त के समीक्षक देखें, कवयित्री ने इन पारिवारिक चित्रों में स्थूल गद्य का चमत्कार इसका परिमार्जन और सौन्दर्य प्रसाधन। वे देखें कि अपने अत्यंत सरल और रोजमर्रा के प्रांजल गद्य से इस अद्‌भुत प्रतिभा–सम्पन्न और क्षमताशील जादूगरनी ने अपने प्राणों के वैद्युतिक स्पंदन द्वारा स्थूल गद्य को किस संजीवनी घोल में परिणीत कर दिया है। यदि सूक्ष्म काव्य कला तत्व से अधिक सूक्ष्म और वायवीय कोई तत्व हो सकता है तो महादेवी के यह गद्य–चित्र उसी की ज्वलंताएँ सजीव और सहज निदर्शन हैं'।

> महादेवी जी का गद्य निबन्ध, रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रावृत्त के रूप मे सम्पूर्ण साहित्य–जगत् में विस्तीर्ण है। हिन्दी साहित्य में भावनात्मक श्रेष्ठ, निबन्ध, समर्थ रेखाचित्र, भावपूर्ण जीवन्त संस्मरण हृदयस्पर्शी भावनाओं के प्रेरक यात्रावृत्त के रूप में महादेवी जी का समग्र गद्य साहित्य उल्लेखनीय है'।
>
> महादेवी जी के सम्पूर्ण गद्य साहित्य का विधानरूप क्रमिक विवेचन प्रस्तुत है–

1–अतीत के चलचित्र (रेखाचित्र) सन् 1941 ई0।
2– शृंखला की कड़ियाँ (निबन्ध) सन् 1942 ई0।
3– स्मृति की रेखाएँ (रेखाचित्र) सन् 1943 ई0।
4– पथ के साथी (संस्मरण) सन् 1956 ई0।
5– क्षणदा (ललित निबन्ध) सन् 1956 ई0।
6– साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध, सन् 1960 ई0।
7– मेरा परिवार (पशु–पक्षियों का संस्मरण) सन् 1971 ई0।
8–मेरे प्रिय संस्मरण, सन् 1984 ई0।
9–संकल्पिता, सन् 1986 ई0।
10–स्मृति–चित्र (गद्य संग्रह)।

हमारे यहाँ कहा गया है कि कवि का कथन है–'गद्यं कविनाम् निकषं वदन्ति।' कवि के लिए उन्होने गद्य को कविता की कसौटी निश्चित किया है। यह मेरे विचार में बहुत उचित जान पड़ता है, क्योंकि कविता से गद्य का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है और अच्छा कवि होने के लिए कवि अच्छा गद्यकार हो, यह भी आवश्यक नही है, किन्तु यह कहा गया है और चूँकि मैने गद्य की यात्रा भी लम्बी की है उतनी ही इसका एक बड़ा कारण तो यह है कि मेरे जो गुरू थे वे इस सम्बन्ध में बड़े ही कट्टर थे। वे बहुत ध्यान देते थे भाषा के सम्बन्ध में। हमारे समय में सुलेख लिखना और अच्छा गद्य लिखना बड़ा महत्वपूर्ण माना जाता था और जहाँ तक मैं समझती हूँ, हमारे प्राचीन साहित्य में गद्य का जितना विस्तार है, जितने प्रकार हैं अन्य किसी साहित्य में नहीं मिलेंगे। ब्राह्मण ग्रन्थों में, उपनिषदों में और हमारे यहाँ जो एक प्रणाली है। शास्त्रार्थ की वह तो अद्‌भुत है। उसके लिए तर्क से संलग्न रहना पड़ता है। मै साधारण रूप से निबन्ध लिखने लगी, फिर ऐसा हुआ कि जब मैं प्रयाग आई तो मै शायद छठवें दर्जे

ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

में थी, और क्रास्थवेट विद्यालय में एक पेड़ की डाल पर बैठकर लिखा करती थी। वह बगीचा में एक खटिक था। वह बहुत सी मुर्गियाँ पालता हैं मुर्गी के बच्चे मुझकों बहुत अच्छे लगते है। वे फूल जैसे होते है उन्हे मै रोज गिन लेती थी तब बैठकर कविता लिखती थी। एक दिन उसमें एक बच्चा गायब था। मैने उस खटिक से पूछा तो उसने बताया एक हमारी नयी टीचर आई थी, ले गई। मैं कहा, उतने छोटे बच्चे को कैसे पालेंगी ? वह हँसने लगा, कहा 'पालेगी नहीं' खायेंगी।

अब तो मैने कविता–पुस्तिका और सब समेट कर रख दिया और जाकर अपने कमरे मे लेटकर रोना शुरू किया। जब मै खाने नहीं गयी तो मैटून आई। उन्होने पूछा, क्या बात है ? उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होने कहा–ये बात है, वे उस टीचर के पास गयी उनसे कहा उस समय तक मुर्गी का बच्चा मारा–वारा नहीं गया था। डलिया के नीचे ढँका था। उन्होने कहा कि 'महादेवी खाना नहीं खा रही है, रो रही है। आप इसको न मारिए, दे दीजिए।' उन्होने दे दिया। उसको ले जाकर मैने रक्खा और तब उसके बाद मेरे मन में आया कि सब की पहचान रखनी चाहिए, नही तो कोई और उठा ले जायेगा। तब मैने लिखा, उसके चोख पीले रंग के पंजे ऐसे और पंख इतने–इतने निकले हैं और ऐसी है, उसका नाम मूँगा है। ये मेरी पहली 'संस्मरण' की भूमिकाएँ है फिर उसके बाद मैने बहुत से पशु–पक्षियों का विवरण लिखा'। एक नौकर था बेचारा पड़ोस में उसकी मालकिन अप्रसन्न हुई उससे, तो उसको निकाल दिया। उन्होने वह बच्चों को बहुत चाहता था बच्चे जब घूमने निकलते थे तो बैठा रहता था बताशे लेकर उससे पूछा मैने–तो वह रोने लगा कि हमें निकाल दिया। तब मुझे अपने बचपन के रामा की याद आई मुझको बहुत चाहता था। हम लोग उसको बहुत तंग किया करते थे, तब भी वह कभी क्रोधित नहीं होता था। मैने उसका संस्मरण लिखा।

यह यात्रा वहीं से आरम्भ होती है, जहाँ से तीन दौर में मैने भाषा सीखीं तब वे छोटे–छोटे निबन्ध लिखाते थे। प्राकृतिक दृश्यों पर अधिक लिखा है आगे चलकर उन्ही का विकास हुआ। सम्भवतः वह 'निकर्ष' हो सकता है या नहीं यह मै नहीं जानती लेकिन मुझे लगता है कि गद्य को हमारा निकर्ष क्यों माने जाए ? अगर मै गद्य न लिखती तो भी क्या होता ? अब यह प्रश्न कोई कर सकता है कि जब मै गद्य लिखती हूँ तो कथा क्यों नहीं लिखती'। कथा लिखने की इच्छा संस्मरण में पूरी हो जाती है ये देखा रेखाचित्र नहीं है कि जैसा प्रायः लोगों का भय हो जाता है। रेखाचित्र में तो हम कुछ रेखाओं में, तटस्थ भाव से किसी व्यक्ति को कसते हैं, लेकिन संस्मरण में ऐसा नहीं होता। संस्मरण वहीं रह जाता है जो हमे अच्छा लगता है, जिसे हम बार–बार याद करते है वहीं तो संस्मरण में आयेगा। रेखाचित्र उन व्यक्तियों के हैं जो मेरे जीवन के निकट आये है। बहुत निबन्ध ऐसे नहीं है। निबन्ध में अध्ययन भी है मेरा, क्योंकि मैने पढ़ा तो है ही मै अच्छी विद्यार्थियों में रही हूँ और निबन्ध में मुझे सबसे अधिक अंक मिलते रहे हैं, स्वतन्त्र लेखन में अंग्रेजी के प्रश्न–पत्र में भी मुझे सबसे अधिक अंक मिले, क्योंकि विचार तो कही जाता नहीं विचार का प्रश्न है, जहाँ विशुद्ध बुद्धि का प्रश्न है, वहाँ मैं दूसरी तरह लिखती हूँ तटस्थ भाव से लिखती हूँ, उस विषय को समझ कर भी लिखती हूँ। इस तरह से गद्य लेखन की तीन धारायें हैं।

मैं नही मानती कि यह मेरी कविता की कसौटी हो सकता हैं लेकिन संस्मरण मेरी कविता की कसौटी हो सकते हैं, निबन्ध बिल्कुल दूसरी विधा है। वह मुझे दूर, वहाँ ले जाती है जहाँ तर्क चलता है। कविता में कोई तर्क नहीं चलता। कविता में एक मनोभाव है, एक बुद्धि की प्रक्रिया है'। हृदय की प्रक्रिया बुद्धि की प्रक्रिया से संस्मरण में मिलती है, निबन्ध में नहीं मिलती। इसलिए वह बहुत क्लिष्ट लगता है वह मन को बहुत अच्छा छूता नहीं इसी तरह जो मै बोलती हूँ वही लिखती हूँ, मै उसमें तर्क बहुत नहीं देती।

सम्भवतः मेरे किसी भी भाषण में कोई तर्क नहीं होता किन्तु उसे मैं किसी तरह दूसरे के हृदय के निकट पहुँचा देती हूँ, क्योंकि उसमें जो क्रिया है वह वास्तव में हृदय का भी है। मै मूलतः कवि हूँ। मुझे फूल का खिलना अच्छा लगता है, परन्तु ऐसा नहीं है कि वैज्ञानिक युग में या तर्क के युग में मै तर्क नहीं कर सकती या मेरी बुद्धि की प्रक्रिया शिथिल है। अब इसमें से निष्कर्ष क्या होगा, यह मैं नहीं जानती। मैं समझती हूँ, निकष की आवश्यकता ही नहीं है। लोग महादेवी के साहित्य के रहस्यात्मक होने की चर्चा करते है पर क्या महादेवी से भी अधिक रहस्यात्मक किताब के खुले पृष्ठों सा, स्पष्ट तथा सर्वजन के दुःखों से एकरूप शीलवान कोई और व्यक्तित्व भी हो सकता है। हाँ! महादेवी को समझाने के लिए समग्रता से समझने के लिए एक करूण दृष्टि और निष्कलुष दृश्य चाहिए ।

आज का भौतिक युग असली माने मे काव्य का युग नहीं रह गया है बल्कि वह गद्य का युग है'। महादेवी की काव्य प्रतिभा की चर्चा तक सीमित रहने वाले आलोचक वस्तुतः उनकी गद्य–गरिमा को समझ ही नहीं पाते।

सन्दर्भ सूची–

[1]. महादेवी वर्मा, पथ के साथी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद पहला पेपर बैक संस्करण 2008।
[2]. महादेवी वर्मा, मेरे प्रिय संस्मरण, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 5, June 2023

[3]. महादेवी वर्मा, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबन्ध चयन गंगा प्रसाद पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद चतुर्थ संस्करण 1995।
[4]. महादेवी वर्मा, संकल्पिता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2003।
[5]. महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियाँ, लोकभारतीय प्रकाशन इलाहाबाद पहला पेपर बैक संस्करण 2008।
[6]. महादेवी वर्मा, अतीत के चलचित्र लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद पहला पेपर बैक संस्करण 2008।
[7]. महादेवी वर्मा, सान्ध्यगीत, भारतीय भण्डार इलाहाबाद, छठवाँ संस्करण संवत् 2032 विक्रम।
[8]. महादेवी वर्मा, यामा भारतीय भण्डार इलाहाबाद, पंचम संस्करण–1971।
[9]. महादेवी वर्मा, रश्मि, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड इलाहाबाद सप्तम् आवृत्ति 1983।
[10]. महादेवी वर्मा, सन्धिनी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1995।
[11]. महादेवी वर्मा, हिमालय राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
[12]. महादेवी वर्मा, मेरा परिवार, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पहला पेपर बैक संस्करण 2008।
[13]. श्रीवास्तव परमानन्द, सम्पादक, महादेवी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1976 ।
[14]. महादेवी वर्मा, दीपशिखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, पहला पेपर बैक संस्करण 2008।
[15]. महादेवी वर्मा, संभाषण, साहित्य भवन प्रा0 लि0 इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण 1976।